कलम की सुगंध
अर्णव कलश एसोसिएशन

सरोज की कुंडलियां

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

श्रीमती सरोज दुबे 'विधा'

सरोज की कुण्डलियां

(कलम की सुगंध छंदशाला)

सरोज दुबे 'विधा'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-224-1
संपादक. अनिता मंदिलवार "सपना"
आवरण चित्र . संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- डॉ. प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल. antrashabdshakti@gmai1.com
वेबसाईट. www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण. 2020, सरोज दूबे "विधा"
मूल्य. 90.00 रूपये
मुद्रक. शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY SAROJ DUBEY 'VIDHA'
वैधानिक चेतावनीः. इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा.शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद.विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

लेखन उत्तम सरोज की, करती यहाँ कमाल।
कहती सपना है यही, आप रहो खुशहाल।।

कलम की सुगंध छंदशाला के द्वारा समय समय पर छंद विधाओं पर शतकवीर आयोजन होता रहता है। इसके पहले दोहा, रोला, चौपाई, कुण्डलियाँ शतकवीर का सफल आयोजन हो चुका है। आगे भी कई विधाओं पर शतकवीर का आयोजन करने का विचार प्रस्तावित है। ये सभी आयोजन पटल के संस्थापक आदरणीय गुरू संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशन में संपन्न होते रहें है।

इस बार शतकवीर आयोजन में शामिल रचनाकारों की सौ कुण्डलियों को पुस्तक रूप देने की योजना आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशानुसार कलम की सुगंध ने अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन के सौजन्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई। आदरणीया प्रीति सुराना जी ने सहर्ष स्वीकार किया। हम उनके बहुत आभारी हैं ।

इसी क्रम में आदरणीया सरोज दुबे "विधा" जी का एकल संग्रह "सरोज की कुण्डलियाँ" प्रकाशन में है। सर्वप्रथम आदरणीया "विधा" जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ। आदरणीया विधा जी की साहित्य साधना अनवरत जारी है। कुण्डलियाँ जैसे कठिन छंद विधा पर सतत कलम चलना आपकी साहित्यिक सृजनात्मकता का परिचायक है।

माँ शारदे की कृपा से आपकी लेखनी नई यात्रा तय कर अपनी निर्धारित मंजिल को अवश्य प्राप्त करेगी।

अमंदिलवार

मुख्य संचालिका
अनिता मंदिलवार सपना
कलम की सुगंध छंदशाला

समीक्षा

आदरणीय सरोज दुबे विधा जी,

एक सुंदर आकर्षक व्यक्तित्व की धनी, छंद विधाओं पर गहरी पकड़। अपनी लेखनी से समाज को दर्पण दिखाती नजर आती हैं। आपके कई साझा संकलन आ चुके हैं और आपने अनवरत साहित्य की सेवा की। कई साहित्यिक मंचों में आपका योगदान अविस्मरणीय है। मंच प्रस्तुतीकरण और स्वर ओजपूर्ण एवं मधुर है।

आपने सिर्फ उत्तम कुंडलियों का सृजन ही नहीं किया वरन् उनका प्रस्तुतीकरण भी बेहतरीन ढंग से करती हैं। सबसे जटिल छंद पर 100 से ज्यादा कुंडलियों का सृजन कर अपनी गहरी पकड़ बनाई है। आपके सतत् सृजन का ही परिणाम है कि आपने कम समय में इतनी अत्यधिक कुंडलियाँ सृजित की और पाठकों के बीच जाकर यह अवश्य लोकप्रिय बनेगी ऐसी मेरी आशा है। आप की कुंडलियों का विषय भी समसामयिक है। परंपरागत कुंडलियों से अलग आपने विशेष पहचान बनाई है। अपनी कुण्डलियों में आलंकारिक भाषा का प्रयोग किया है। शब्द चयन अति उत्तम, सरल, सहज भाषा का प्रयोग आपकी रचना की विशेषता है जो सीधे पाठक के हृदय तक पहुँचती है।

आपने कविता, दोहा, हाइकू, कहानी, निबंध, भजन, लघुकथा आदि लगभग सभी विधाओं में सृजन कर सशक्त लेखनी का डंका बजाया है। कुंडलियाँ शतकवीर बनकर आपने अपने सारे रिकॉर्ड ध्वस्त कर दिए।आपने अपनी कुंडलियों में नारी के कोमल भावों को और नारी के श्रृंगार के विविध रूपों को बखूबी उतारा है। मानवीय रिश्तों का सुंदर शिल्प उभरकर कुंडलियों में जीवंत हो उठता है आपने जहाँ एक ओर सीमा पर तैनात सैनिकों की कठिनाइयों का वर्णन किया, वहीं दूसरी ओर आशा के फूल खिलाते आसमान में उड़ने की आकांक्षा, होली के त्योहार और प्रियतम साजन व सजनी की नेह की डोर भी खींची है। कहीं कहीं भक्ति रस में डूबी कुंडलियाँ जो हमें आस्था से जोड़ती हैं, झलक दिखला जातीं हैं।

नि:संदेह जीत और साहस को अनुबंधित करती आप की कुंडलियाँ प्रेरणा स्रोत और मोहक हैं जो दर्शक को पुस्तक के अंत तक बाँधे रखती हैं। आने वाले समय में यह पुस्तक साहित्य जगत के लिए अनुपम भेंट होगी और एक साहित्य संपदा के रूप में संचित की जाएगी।

उत्तम छवि दिखला रही, आकर्षक व्यक्तित्व।
मुश्किल विधा चला रही, अनुपम रहा कृतित्व।।
अनुपम रहा कृतित्व, प्रेम की बिखरी आभा।
गूँजे चहुँ संगीत, रोक सकती क्या द्वाभा।।
बनी बड़ी शतवीर, श्रेष्ठ सृजती अत्युत्तम।
अथक लगन फल मिष्ठ, सफल कुण्डलियाँ उत्तम।।

आपकी पुस्तक 'सरोज की कुंडलियाँ' की सफलता के लिए मैं हृदय तल से शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ। यह हिंदी साहित्य जगत में अपना परचम लहराएगी और युगों युगों तक याद रखी जाएगी। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

आपकी

अर्चना पाठक निरंतर

शुभकामना संदेश

प्रिय सरोज दुबे "विधा" जी,

कलम की सुगंध पर आपकी सशक्त कलम अनेक छंद विधाओं पर निरन्तर नियमित सृजन करती आ रही है। कुण्डलियाँ का शतक सृजन करने जैसी विशेष उपलब्धि और उसके पश्चात आपका यह एकल संग्रह आपकी छंद विधा पर समझ और सतत श्रम का परिचायक है। यह संग्रह 'सरोज की कुण्डलियाँ' विभिन्न विषयों को समेटे हुए एक अनुपम और अनोखा संग्रह है। पाठक वर्ग इसे पढ़ते हुए अनेक रसों का स्वाद चखकर निश्चय ही आनंद प्राप्त करेगा। यह उपलब्धि आपको भी जीवन भर आनंद की अनुभूति देती रहेगी और इस प्रकार से आप सैकड़ों संग्रह प्रकाशित करवाकर शुद्ध साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान प्राप्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ आपको ढेरों बधाई एवं मंगलकामनाएं....!

संजय कौशिक 'विज्ञात'

संस्थापक

कलम की सुगंध

कवयित्री की कलम से

माँ शारदे को नमन

अत्यंत हर्ष हो रहा है कि माँ शारदे और ईश्वर की असीम कृपा से अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से मेरा प्रथम छंद बद्ध एकल "संग्रह" प्रकाशित हो रहा है। जिसमें 100 कुण्डलियाँ सम्मिलित हैं। यह पुस्तक **"सरोज की कुण्डलियाँ"** नाम से प्रकाशन में आ रही है।

आदरणीय गुरूदेव संजय कौशिक 'विज्ञात' जी का हार्दिक आभार करती हूँ, उनके मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से संकलन पूर्ण हुआ।

छंद लेखन की मेरी यह यात्रा बहुत व्यस्तता भरी रही, हिन्दी साहित्य के कठिन छंद कुण्डलियाँ लेखन का कार्य 50दिन तक, दिन और रात के अथक परिश्रम से सम्पूर्ण हुआ। मेरे पतिदेव आदरणीय आशीष दुबे जी का भी सहयोग मिला, उनका आभार।

मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि पाठक वर्ग मेरे इस संग्रह को अपना स्नेह और समर्थन देंगे, इस पुस्तक को मैं माँ सरस्वती, अपने पूज्नीय माता.पिता, और आदरणीय गुरूदेव को समर्पित करती हूँ जिनके आशीर्वाद से यह संभव हो पाया इसी विश्वास के साथ ..

सपना था मुझको मिले, शतकवीर सम्मान।
इतने दिन लिखती रही, सदा लगा कर ध्यान।।
सदा लगा कर ध्यान, बीच में साहस टूटा।
मन जब हुआ निराश, लगा अब लिखना छूटा।
हिय आवाज सरोज, धर्म लेखन ले अपना।
शब्द बढ़े फिर साथ, करो पूरा तुम सपना।

धन्यवाद

सरोज दुबे 'विधा'

रायपुर छत्तीसगढ़

1.

वेणी

सजती वेणी से सदा, दुल्हन की है शान।
बालों की शोभा बढ़े, नारी की पहचान।।
नारी की पहचान, खड़ी बालम को ताके।
बनके सुन्दर नार, केश में फूल लगाके।।
कहती सुनो सरोज, सदा मंजुल सी लगती।
नारी का श्रृंगार, यही वेणी जब सजती।।

2.

कुमकुम

टीका की प्रथा, सदियों से ये रीत।
कन्या को देवी समझ, रखें सदा ही प्रीत।।
रखें सदा ही प्रीत, सभी के माथे सजता।
कहें शुभ का प्रतीक, ईश ललाट में लगता।।
कहती सुनो सरोज, नहीं ये पड़ता फीका।
पूजा थाली संग, दिखे ही कुमकुम टीका।।

3.

काजल

नारी काजल से सजे, नैनों की है शान।
चाहे जितना भी सजे, पर फीकी मुस्कान।।
पर फीकी मुस्कान, बुरी नजर से बचाती।
एक यही श्रृंगार, नयन नार के सजाती।।
कहती सुनो सरोज, कहे दुनिया ये सारी।
काजल का श्रृंगार, लगे सुन्दर हर नारी।।

4.

गजरा

गजरा हाथों बाँध के, मुँह में लेकर पान।
कोठे पर हैं बेचते, दानव नन्ही जान।।
दानव नन्ही जान, सदा खुशबू को मसले।
गजरा बिना जुबान, कली का भँवरा रसले।।
कहती सुनो सरोज, तृप्त करता ज्यूँ बजरा।
इसके रूप अनेक, सजे बालों में गजरा।।

5.

पायल

पायल पैरों में सजे, मधुर लगे झंकार।
मटक-मटक गोरी चले, कर सोलह श्रृंगार।।
कर सोलह श्रृंगार, देख के नजर चुराती।
करे पिया से प्यार, रही यौवन छलकाती।।
कहती सुनो सरोज, करे ये मन को घायल।
लगे महावर पाँव, पहन चलती जब पायल।।

6.

कंगन

कोमल कोमल हाथ में, कंगन का श्रृंगार।
देखो बिटिया जा रही, छोड़ पिता का द्वार।।
छोड़ पिता का द्वार, चली जाती है पी घर।
बाँध प्रेम की डोर, करे सेवा जीवन भर।।
कहती सुनो सरोज, पहन के कंगन सोनल।
रखती कुल की लाज, करे वो बातें कोमल।।

7.

बिन्दी

मस्तक पर बिंदी सजे, लगे भृकुटि के बीच।
माथे की शोभा बढ़े, बढ़े पिया से प्रीत।।
बढ़े पिया से प्रीत, रहे सजना की कायल।
चमका दे हर रूप, करे ये दिल को घायल।।
कहती सुनो सरोज, सदा देती ये दस्तक।
बिन्दी रंग बिरंग, लगे सुन्दर हर मस्तक।।

8.

डोली

डोली बैठी बेटियाँ, कर सोलह श्रृंगार।
बाबुल का घर छोड़ के, चले पिया के द्वार।।
चले पिया के द्वार, प्रेम से साथ निभाती।।
रखती दिल में प्यार, सदा वे खुशी दिलाती।
कहती सुनो सरोज, शहद सी मीठी बोली।।
चुभते दिल में शूल, उठे जब उनकी डोली।।

9.

आँचल

माता आँचल में मिले, खुशियों का भंडार।
उनके आँचल के तले, निश्छल प्रेम अपार।।
निश्छल प्रेम अपार, मिले खुशियाँ तब प्यारी।
बच्चों में ले ढूँढ, खुशी वो अपनी सारी।।
कहे सरोज विचार, सभी को खुश मन भाता।
मिले खुशी सौ बार, संग रहती जब माता।।

10.

कजरा

कजरा आँखों में सजा, चमक रही है आज।
साजन को भाये सदा, गोरी के अंदाज।।
गोरी के अंदाज, लड़े नैना सकुचाती।
कर अद्भुत श्रृंगार, देखकर पिया लजाती।।
कहती सुनो सरोज, लगा बालों में गजरा।
देखे दर्पण रूप, रहे अँखियन में कजरा।।

11.

झुमका

झुमका कानों में सजे, चूड़ी गोरी हाथ।
गालों को लटकन छुए, चली पिया के साथ।।
चली पिया के साथ, सदा गोरी इठलाती।
काले-काले बाल, हवा में उड़-उड़ जाती।।
कहती सुनो सरोज, लगे गोरी का ठुमका।
हृदय चलाती वाण, पहन कानों में झुमका।।

12.

चूड़ी

चूड़ी वाले हाथ में, पकड़ा दो तलवार।
देवी रुप धर के करे, दुष्टों का संहार।।
दुष्टों का संहार, नहीं है नारी अबला।
सबका रखती ख्याल, दिखे कोमल है सबला।।
कहती सुनो सरोज, भले बेले घर पूड़ी।।
करती बाहर काज, पहन हाथों में चूड़ी।।

13.

जीवन

चलते जीवन में रहो, चलना इसका काम।
डगर-डगर काँटे बिछे, नहीं मिले आराम।।
नहीं मिले आराम, चलो निज पथ पर आगे।
बढ़ने में ही शान, भाग्य तब ही ये जागे।।
कहती सुनो सरोज, धूप में तन हैं जलते।
मिलती जीत जरूर, कर्म करने के चलते।।

14.

उपवन

उपवन कोयल कूकती, बैठ आम की डाल।
तरू पवन से झूमते, कहते अपना हाल।।
कहते अपना हाल, दृश्य आकर्षित करता।
रंग-बिरंगे फूल, कली पे भौंरा मरता।।
कहती सुनो सरोज, रखो सब सुन्दर चितवन।
खिलना बनके फूल, बना लो मन को उपवन।।

15.

कविता

कविता में अनुभव कहो, भावों का है मेल।
हृदय बोझ हल्का करो, सब कष्टों को झेल।।
सब कष्टों को झेल, शब्द भावों को देता।
गूँगे के हैं बोल, नाव विचार की खेता।।
कहती सुनो सरोज, सृजन की बहती सविता।
बीता समय समेट, बने रचना कवि कविता।।

16.

ममता

ममता की इस छाँव में, मिले सदा आराम।
ममता ऐसी है दवा, मिटते रोग तमाम।।
मिटते रोग तमाम, मिटा दे पशुता दानव।
इसमें शक्ति अपार, बना दे सबको मानव।।
कहती सुनो सरोज, दिखा के अपनी क्षमता।
रखती सबको बाँध, लुटा के अपनी ममता।।

17.

बाबुल

मारो मत बाबुल मुझे, तेरा ही हूँ खून।
पलती माँ की कोख में, मांगे आज सुकून।।
मांगे आज सुकून, नहीं मांगती खिलौने।
चाहे माँ की गोद, करो मत काम घिनौने।।
कहती सुनो सरोज, डाँट सुना दो हजारो।
चाहे रखना दूर, सुनो बाबुल मत मारो।।

18.

भैया

छोटा भैया बोलती, रखे ख्याल वो खूब।
मुझको उदास देख के, रहे सोच में डूब।।
रहे सोच में डूब, बात सदा वो मानता।
करता मेरा काम, कष्ट सदा वो जानता।।
कहती सुनो सरोज, नहीं सिक्का वो खोटा।
सोने सा है भाव, रखे खुश भैया छोटा।।

19.

बहना

बहना आवोगी सदा, मुझे बहुत तुम याद।
साथ में हम बड़े हुये, करते ढेरों बात।।
करते ढेरों बात, रात भर जागा करते।
हो जाती थी भोर, डाट से माँ की डरते।।
कहती सुनो सरोज, दूर तुमसे अब रहना।
सबका रखो खयाल, सुनो तुम मेरी बहना।।

20.

सखियाँ

मेरी सब सखियाँ गईं, चली गईं सब दूर।
मिलना अब होता नहीं, होती बात जरूर।।
होती बात जरूर, याद बचपन की आती।
करते मस्ती खूब, सोच आँखे भर जाती।।
कहती सुनो सरोज, राह देखूँ मैं तेरी।
बना रहे ये प्यार, रहो यादों में मेरी।।

21.

कुनबा

रहना है जो हर्ष से, कुनबा से हो प्यार।
सुख-दुख दोनों में रहे, संग-संग हर बार।।
संग-संग हर बार, मिले बूढ़ों का साया।
और मिले फिर स्नेह, बढ़े आपस की माया।।
कहे सरोज विचार, सभी बातों को सहना।
मोती बन कर संग, सभी धागे में रहना।।

22.

पीहर

भैया पीहर है सदा, तेरे से गुलजार।
मातु पिता के बाद में, तेरा है घर बार।।
तेरा है घर बार, मान तुम देते रहना।
आऊँ हर त्योहार, यही था माँ का कहना।।
कहती सुनो सरोज, रही बन मैं तो गैया।
भेजा दूजे द्वार, याद तुम रखना भैया।।

23.

पनघट

भरने जल पनघट चली, देखे श्याम की राह।
गोपी व्याकुल हो रही, नहीं श्याम की थाह।।
नहीं श्याम की थाह, नयन ढूँढे अब मेरी।
नहीं मिले अब चैन, बनी मैं जोगन तेरी।।
कहती सुनो सरोज, लगन में गोपी जलने।
नहीं करो अब देर, देख आई जल भरने।।

24.

सैनिक

सैनिक पहरा दे रहे, सरहद पर दिन-रात।
हर मौसम रहते खड़े, जाड़ा या बरसात।।
जाड़ा या बरसात, देश की रक्षा करते।
हाथों पर ले जान, देश की खातिर मरते।।
कहती सुनो सरोज, काम ये उनका दैनिक।
देते मन को चैन, रहे दे पहरा सैनिक।।

25.

कोयल

बागों कोयल कूकती, छाई मस्त बहार।
मंद-मंद समीर चले, प्रकृति करे श्रृंगार।।
प्रकृति करे श्रृंगार, हूक जियरा में लगती।
सुन कोयल की कूक, विरह अग्नि सुलगती।।
कहती सुनो सरोज, व्यथा अपनी तुम त्यागो।
डाली जैसे झूम, सदा लहराओ बागों।।

26.

अम्बर

चमकू अम्बर में सदा, तारों चाँद समान।
मुझे मिलता रहे सदा, पथ-पथ पर सम्मान।।
पथ-पथ पर सम्मान, मुझे नेक कर्म करना।
बहुँ जब तक है प्राण, प्रेम का बनके झरना।।
कहती सुनो सरोज, मणी बन कर मैं दमकू।
करूँ ऐसा काम, सदा रौशन हो चमकू।।

27.

अविरल

गंगा अविरल बह रही, महिमा करूँ बखान।
पावन जल से जग हुआ, गंगा नदी महान।।
गंगा नदी महान, सभी पापों को धोती।
करती है उपकार, सदा पूजा है होती।।
कहती सुनो सरोज, कभी मत लेना पंगा।
कचरा मत यूँ डाल, उफन जायेगी गंगा।।

28.

सागर

सागर जैसा मन रखो, गहरा रखो विचार।
नदियाँ जैसा जा मिलो, ऐसा हो आचार।।
ऐसा हो आचार, सघन तरु जैसा बनना।
मिले पथिक को छाँव, पीर सबकी तुम सुनना।।
कहती सुनो सरोज, वारि बन रहना गागर।
करना ठंड प्रदान, बनो ऐसे तुम सागर।।

29.

अनुपम

फैली है अनुपम छटा, खुशियाँ आई हाथ।
प्रकृति गीत सा गा रही, नये साल के साथ।।
नये साल के साथ, कहे मिलजुल के रहना।
आपस में हो प्रेम, कभी अनीति मत सहना।।
कहती सुनो सरोज, दान दो भर भर थैली।
करो गरीबी दूर, मिटा कुरीति जो फैली।।

30.

धड़कन

तेरी धड़कन मैं बनूँ, रहना तेरे साथ।
प्रियतम मेरे तुम सदा, पकड़े रहना हाथ।।
पकड़े रहना हाथ, रूप कुछ पल का होता।
स्वभाव देता साथ, बीज ममता का बोता।।
कहती सुनो सरोज, प्रेरणा बनकर मेरी।
रचो नया इतिहास, बनूँ मैं धड़कन तेरी।।

31.

वीणा

बजते वीणा से रहो, छेड़ मधुर तुम तान।
तारों सी देना चमक, करम डगर का जान।।
करम डगर का जान, पथिक के पथ पर सजना।
रहना उनके हाथ, करो से उनके बजना।।
कहती सुनो सरोज, रहो साजो से सजते।
बनके वीणा वाद्य, खुशी से रहना बजते।।

32.

नैतिक

शिक्षा नैतिक हो सदा, नैतिक रखो विचार।
नैतिकता पर मिल चलो, नैतिक हो आचार।।
नैतिक हो आचार, सोच नैतिक तुम रखना।
नैतिकता का मान, स्वाद नैतिक ही चखना।।
कहती सुनो सरोज, सदा दो नैतिक भिक्षा।
हो नैतिक कल्याण, मिले जब नैतिक शिक्षा।।

33.

विजयी

होना विजयी तुम सदा, सुनलो वीर जवान।
तुम पर ही तो है टिका, सारा हिंदुस्तान।।
सारा हिंदुस्तान, डटे सरहद पर रहना।
ठंडी या बरसात, नहीं दुश्मन से डरना।।
कहती सुनो सरोज, नहीं घबरा कर रोना।
सबके तुम सरताज, सदा तुम विजयी होना।।

34.

भारत

रहते भारत में सदा, करतें इनका मान।
सभी धरम के लोग हैं, भारत की पहचान।।
भारत की पहचान, भिन्न है सबकी बोली।
अलग-अलग है नाम, रंग बिरंग की टोली।।
कहती सुनो सरोज, दर्द दुख मिलकर सहते।
जैसे सारे फूल, साथ गमले में रहते।।

35.

छाया

छाया बन कब तक रहूँ, बिटिया तेरे साथ।
संग नहीं कोई चले, छूटे सबका हाथ।।
छूटे सबका हाथ, पार खुद करना पड़ता।
खेना पड़ता नाव, तभी जीवन है बढ़ता।।
कहती सुनो सरोज, रखो तुम सबसे माया।
रहना सबके साथ, साथ कब रहती छाया।।

36.

निर्मल

निर्मल अपना मन रखो, निर्मल सदा विचार।
निर्मल बनके तुम रहो, निर्मल हो आचार।।
निर्मल हो आचार, बहो निर्मल नद बनकर।
निर्मल सी हो धार, प्रेम बन बरसो जमकर।।
कहती सुनो सरोज, नहीं हो मन में हल चल।
होगा प्रभु का वास, रखो तन मन सब निर्मल।।

37.

विनती

विनती तुमसे प्रभु करूँ, सदा करूँ सद काम।
जीवन में आगे बढ़ूँ, लेकर तेरा नाम।।
लेकर तेरा नाम, दूर संकट कर देना।
पहुँचाना निज धाम, पीर मेरी हर लेना।।
कहती सुनो सरोज, करूँ मैं कैसे गिनती।
तेरे सब उपकार, जोड़ कर बस करुँ विनती।।

38.

भावुक

होना तुम भावुक नहीं, ज्यादा हे इंसान।
भावुकता में ही गईं, कितनों की हैं जान।।
कितनों की हैं जान, दुखी मन भावुक होता।
फँसे मोह के पाश, नहीं रातों को सोता।।
कहती सुनो सरोज, मगर जीवन मत खोना।
रखो हृदय में हर्ष, नहीं तुम भावुक होना।।

39.

धरती

धरती कहे पुकार के, बोझ नहीं तू डाल।
कचरे से मैं दब गई, बुरा हो गया हाल।।
बुरा हो गया हाल, सभी मुझको माँ कहते।
रखते हैं कम ध्यान, टिके मुझ पर ही रहते।।
कहती सुनो सरोज, नहीं मौसम से डरती।
करती सबसे प्यार, सदा माँ बनकर धरती।।

40.

मानव

मानव का जीवन मिले, देखूँ ये ही द्वार।
भारत का आँगन हे, गंगा माँ सा प्यार।।
गंगा माँ सा प्यार, यही पाऊँ हर बारी।
राम लला का जन्म, हुए थे कृष्ण मुरारी।।
कहती सुनो सरोज, घृणा के मारे दानव।।
कर दें सब संहार, बनें यूँ सच्चे मानव।।

41.

गागर

गागर जैसा गुण रखो, ठंडक करो प्रदान।
थापी खा के भी सदा, तिष का करे निदान।।
तिष का करे निदान, भरा जल शीतल रहता।
रहता हरदम मौन, छलक कर अधजल बहता।।
कहती सुनो सरोज, नहीं बनना तुम सागर।
दो खारिक को फेंक, रहो बनके तुम गागर।।

42.

सरिता

बहती सरिता सी रहूँ, रहूँ सदा गतिशील।
निर्मल कोमल मन बने, सुन्दर बनूँ सुशील।।
सुन्दर बनूँ सुशील, ग्रहण करलूँ गुण सारे।
पत्थर सम अवरोध, प्रवाहित जल से हारे।
कहती सुनो सरोज, तपन से बढ़ तप सहती।
करती सलिल प्रदान, नदी बन कलकल बहती।

43.

गहरा

गहरा मेरा प्रेम है, पता नहीं है थाह।
रोम-रोम में प्रभु बसे, उनकी ही है चाह।।
उनकी ही है चाह, कृपा उनकी है बरसे।
उनका करुँ आभार, नयन दर्शन को तरसे।।
कहती सुनो सरोज, रहे उनका ही पहरा।
जहाँ करूँ मैं वास, प्रेम मेरा है गहरा।।

44.

आँगन

तेरे आँगन से उठी, बाबुल डोली आज।
दिल से तेरे पास हूँ, करना मुझ पर नाज।।
करना मुझ पर नाज, याद बातें हैं तेरी।
होना नहीं उदास, किये आऊँ बिन देरी।।
कहती सुनो सरोज, रहे जेहन में मेरे।
आपके संस्कार, चली मैं घर से तेरे।।

45.

आधा

रहता जीवन में सुनो, समय सदा बलवान।
आधा आधा ही मिले, सुख दुख हे इंसान।।
सुख दुख हे इंसान, मिले जो भी खुश रहना।
मन में रख विश्वास, खुशी से हर गम सहना।।
कहती सुनो सरोज, भाव में तू है बहता।
होता क्यों हैरान, वक्त रूके कब रहता।।

46.

यात्रा

यात्रा में मिलते सदा, तरह-तरह के लोग।
जाने किसके साथ में, किसका है संजोग।।
किसका है संजोग, सही अभिमत से मिलता।
देता फिर आराम, प्रेम का गुल जब खिलता।।
कहती सुनो सरोज, बढ़े अपनों की मात्रा।
सुघड़ बने पहचान, सहज कटती है यात्रा।।

47.

कोना

कोना देखो हे सखी, देखो माखन चोर।
माखन मुँह लिपटा हुआ, नटखट नंदकिशोर।।
नटखट नंदकिशोर, फोड़ सब मटकी देता।
मटके जब गोपाल, प्रेम झिड़की सुन लेता।।
कहती सुनो सरोज, कृष्ण धुन में ही खोना।
होना नहीं उदास, महक उठता हर कोना।।

48.

मेला

मेला जीवन का लगा, देख रहा इंसान।
घूम-घूम सब खा रहे, गरम-गरम पकवान।।
गरम-गरम पकवान, बैठ बूढ़े खुश होते।
बातें अपनी सोच, आज हालत पे रोते।।
कहती सुनो सरोज, अंत में रहे अकेला।
सच्ची है ये बात, लगे निभृत हर मेला।।

49.

धागा

धागे से मैं बँध गई, धागा प्रभु के हाथ।
सुख दुख दोनों में रहें, वो ही मेरे साथ।।
वो ही मेरे साथ, जान लेते सब बातें।
बिना कहे भगवान, स्वप्न में मेरे आते।।
कहती सुनो सरोज, रहो तुम मेरे आगे।
रखना अपने साथ, बाँध के पक्के धागे।।

50.

बिखरी

बिखरी देखो चाँदनी, रातों में चहुँओर।
ओढ़ श्वेत सी ओढ़नी, चंचल भाव विभोर।
चंचल भाव विभोर, ठहर कर आहें भरती।
रूप ज्योत्सना देख, मगन अन्तःपुर करती।।
कहती सुनो सरोज, देख छविअपनी निखरी।
हुई शरम से लाल, निशा में आभा बिखरी।।

51.

गलती

गलती से मत बोलना, वचन कभी कटु बोल।
लगता हिय में ठेस है, सोच समझ मुख खोल।।
सोच समझ मुख खोल, बोल मीठे ही भाते।
मन को मिले सुकून, याद जीवन भर आते।
देखे हाथ सरोज, समय निकले कर मलती।
रखना बस ये ध्यान, नहीं करना तुम गलती।।

52.

बदला

बदला बदला सा लगे, देखो मौसम आज।
दस्तक जैसे दे रहा, ऋतुओं का ऋतुराज।।
ऋतुओं का ऋतुराज, पवन खुश हो के झूमें।
खिलते जहाँ प्रसून, भ्रमर कलियों को चूमें।
कहती सुनो सरोज, देख बसंत फिर मचला।
सुन्दर सा ये रूप, लगे मौसम अब बदला।।

53.

दुनिया

रहते दुनिया में सदा, तरह तरह के लोग।
आते वे करने यहाँ, सभी करम के भोग।।
सभी करम के भोग, करे जो वैसा पाते।
दुनिया की ये रीत, साथ कुछ कब ले जाते।।
कहती कहाँ सरोज, सुने बस सच जब कहते।
जीवन के दिन चार, चलो मिल जुल कर रहते।।

54.

तपती

गरमी में तपती धरा, सहती सूरज ताप।
बोझा ढोती है सदा, नहीं करे संताप।।
नहीं करे संताप, गोद में सबको रखती।
करे सभी से प्यार, सुधा रस ये कब चखती।।
कहती सुनो सरोज, कष्ट से बढ़ती नरमी।
तप तप बनी महान, सदा सहती है गरमी।।

55.

मेरा

मेरा मेरा क्यूँ करे, हे मूरख इंसान।
जाना खाली हाथ है, मत हो तू हैरान।
मत हो तू हैरान, जगत से सबको जाना।
माया का ये जाल, लौट के फिर कब आना।।
कहती सुनो सरोज, ध्यान उलझन में तेरा।
नश्वर है संसार, यहाँ सब तेरा मेरा।।

56.

सबका

मालिक सबका एक है, है वो पालन हार।
उसके छाया के तले, मिलता सबको प्यार।।
मिलता सबको प्यार, कष्ट प्राणी का हरता।
करता है उद्धार, काल उससे है डरता।।
कहती सुनो सरोज, रहो बनकर तुम सालिक।
बढ़ना लेकर नाम, जगत का है वो मालिक।।

57.

आगे

रहना आगे तुम सदा, जैसी भी हो राह।
तेरे कहने पर चलूँ, ऐसी मेरी चाह।।
ऐसी मेरी चाह, जगत के तुम रखवाले।
तुमसे है ये आस, खोल किस्मत के ताले।।
कहती सुनो सरोज, भक्ति में मुझको बहना।
विनती प्रभु ये एक, सदा तुम आगे रहना।।

58.

मौसम

बदला मौसम तुम नहीं, बदले मेरे मीत।
जनम जनम का साथ है, सच्ची मेरी प्रीत।।
सच्ची मेरी प्रीत, कहे बिन मैं सब जानू।
तेरे मन की बात, कहे जो वो मैं मानू।।
कहती सुनो सरोज, नैन सरिता से सजला।
बहे प्रेम की धार, नहीं कुछ भी है बदला।।

59.

जाना

जाना सबको छोड़ के, मायावी संसार।
ममता माया से बँधा, करता है तकरार।।
करता है तकरार, जगत में है तू आया।
थोड़ा कर उपकार, दिया जो वो ही पाया।।
कहती सुनो सरोज, नेक कारज से पाना।
सबसे तू सम्मान, छोड़ दुनिया तब जाना।।

60.

करना

करना जीवन में अभी, हितसाधन के काम।
करते जाना है सदा, करना है आयाम।।
करना है आयाम, दिया तूने है दाता।
मुझको ये उपहार, मदद करना है भाता।।
कहती सुनो सरोज, सदा संकट को हरना।
सीखूँ मैं ये काम, बहुत कुछ मुझको करना।।

61.

दीपक

बनके दीपक तुम जलो, करो तिमिर का नाश।
झोंको से तुम मत डरो, करते रहो प्रकाश।।
करते रहो प्रकाश, बनों शुभ प्रतीक जगका।
करना गुस्सा राख, दिखे जो मेरी रग का।।
कहती सुनो सरोज, हरो तम जन जन के।
बनों प्रेम के दीप, जलो तुम दीपक बनके।।

62.

पूजा

करती हूँ पूजा सदा, लिए भाव का फूल।
करना माफ प्रभो मुझे, करूँ अगर मैं भूल।।
करूँ अगर मैं भूल, दोष मेरे तुम हरना।
रहना मेरे साथ, कृपा मुझ पर तुम करना।।
कहती सुनो सरोज, भक्ति जब हिय में भरती।
जपती तेरा नाम, नमन शत शत मैं करती।।

63.

थाली

भोजन रईस को मिले, भर भर थाली रोज।
दीन रहा दिन भर भटक, करता भोजन खोज।।
करता भोजन खोज, भूख पीड़ा वो जाने।
रहे सदा वो मौन, कष्ट को किस्मत माने।।
कहती सुनों सरोज, पार करता है योजन।
रोटी की ले चाह, तभी मिलता है भोजन।।

64.

बाती

बाती तो जलती सदा, करती ज्योति प्रदान।
दिया जले सबको दिखे, बाती से अंजान।।
बाती से अंजान, राख जल के बन जाती।
तम को तले समेट, पथिक को राह दिखाती।।
कहती सुनो सरोज, तेल में डूब नहाती।।
रहे दीप के संग, युगों से जलती बाती।।

65.

आशा

आशा जीवन ज्योति है, जन-जन की पहचान।
आशा बिन मानव लगे, पुतला काठ समान।।
पुतला काठ समान, चाह जीवन का मिलता।
मिटता है संताप, फूल मन का है खिलता।।
कहती सुनो सरोज, पूर्ण होती अभिलाषा।
रखो सदा विश्वास, ज्योति जीवन है आशा।।

66.

उड़ना

उड़ना चाहूँ पर लगा, पूर्ण करूँ अरमान।
घबराऊँ ये सोच के, नहीं दिशा का ज्ञान।।
नहीं दिशा का ज्ञान, राह में कांटे फैले।
कैसे धर दूँ पाँव, रक्त कर देगा मैले।।
कहती सुनो सरोज, मुझे तो अब है मुड़ना।
ले आशा की डोर, गगन में चाहूँ उड़ना।।

67.

खिलना

खिलना है मुझको सदा, बन बागों का फूल।
खुशबू फैले हर दिशा, मौसम के अनुकूल।।
मौसम के अनुकूल, उड़ूं तितली के जैसी।
बैठ सुमन की डाल, महक बन जाऊँ वैसी।।
कहती सुनो सरोज, पवन बन सबसे मिलना।
खुशी खुशी मन झूम, पुष्प ही बनके खिलना।।

68.

होली

जलती धूँ धूँ होलिका, सच्चाई की जीत।
खेले होली राख से, दुश्मन से कर मीत।।
दुश्मन से कर मीत,खिलखिलाकर ही मिलना।
मिल.जुल खेलो फाग, सभी रंगों से खिलना।।
कहती सुनो सरोज, शाम जब जब है ढलती।
सबका लो आशीष, प्रेम से नफरत जलती।।

69.

साजन

सजना साजन के लिये, मुझको सौ सौ बार।
उनके ही खातिर करूँ, मैं सोलह श्रृंगार।।
मैं सोलह श्रृंगार, साथ जीवन भर रहना।
पकड़े उनका हाथ, बात हिय की है कहना।।
कहती सुनों सरोज, गमों को मिलकर तजना।
लानी मंजिल पास, सजन के खातिर सजना।।

70.

सजना

योद्धा बन सजना सदा, वीर पुरुष तू आज।
शौर्य धैर्य हथियार से, दृढी रहे आवाज॥
दृढ़ी रहे आवाज, गर्जना शेरों जैसे।
थर्राए अरि पक्ष, मस्त हाथी के ऐसे।।
कहती सुनो सरोज, दिखे था पहले बोद्धा।
उसने मारी मार, समर का निकला योद्धा।।

71.

डोरी

डोरी से जकड़ा हुआ, सारा ही संसार।
जिसको पकड़े नाथ हैं, डरना है बेकार।।
डरना है बेकार, चरण में उनके रहना।
जपना उनका नाम, भक्ति में उनके बहना।।
पूछे यही सरोज, भक्ति कब होती चोरी।
भक्त प्रभो जब एक, भाव हिय बांधे डोरी।।

72.

बोली

बोली मीठी बोलिये, बोली से ही प्रीत।
बोली ही तो घाव है, बोली मलहम मीत।।
बोली मलहम मीत, जीत सबका मन लेती।
कोयल सी आवाज, स्नेह हिरदे भर देती।।
कहती सुनो सरोज, लगे जैसे मधु घोली।
मिटते सब संताप, सुनें जब मीठी बोली।।

73.

पाना

पाना चाहो तुम अगर, सबका आशीर्वाद।
मधुर वचन ही बोलना, करना नहीं विवाद।।
करना नहीं विवाद, मात की सेवा करना।
रहना उनके साथ, क्रोध से उनके डरना।।
कहती सुनो सरोज, चरण चिह्नों पर जाना।
करना उनका मान, प्यार उनका तुम पाना।।

74.

खोना

खोना तुम अपना नहीं, मान सम्मान आन।
इनके बिन मानव लगे, जीते जी बेजान।।
जीते जी बेजान, सदा गरिमा में रहना।
रखना नेक विचार, लाज का पहनों गहना।।
कहती सुनो सरोज, नहीं आक्रोशित होना।
रखना मुख मुस्कान, मिला उसको मत खोना।।

75.

यादें

यादें अच्छी दे खुशी, कड़वी दे मन चीर।
भूले से कब भूलती, हिरदे की कुछ पीर।।
हिरदे की कुछ पीर, करे विचलित पल बीते।
रहता हृदय उदास, लगे भीतर से रीते।।
कहती सुनो सरोज, अभी कुछ मीठा गा दें।
देखो अपना आज, याद कर अच्छी यादें।।

76.

छोटी

छोटी-छोटी बात पर, जाते क्यूँ तुम रूठ।
बात-बात पर बोलते, जाने कितने झूठ।।
जाने कितने झूठ, हँसी में बातें टाली।
गजरा आये भूल, गले में बाहें डाली।।
कहती सुनो सरोज, प्रीत की अँखियाँ मोटी।
बालम हैं मगरूर, करे नित गलती छोटी।।

77.

मीठी

बोली मीठी बोलिये, मन को मिलता चैन।
कड़वी बोली से गिरे, झर-झर आँसू नैन।।
झर-झर आँसू नैन, प्रेम की बोली भाती।
जागे दिल में आस, सदा सुंदरता लाती।।
कहती सुनो सरोज, असर करती बन गोली।
दूरी करती दूर, कहो तुम मीठी बोली।।

78.

बातें

बातें हरदम कीजिये, समझ बूझ के जान।
बातों से ही दिल जुड़े, मिले कभी अपमान।।
मिले कभी अपमान, ज्ञात सबको हो जाता।
कैसा है इंसान, भाव खुद ही बतलाता।।
कहती सुनो सरोज, बोल अच्छे हैं भातें।
सबको लेते जोड़, सोच के करना बातें।।

79.

चमका

सोना चमका जब तपा, जानो हे इंसान।
तपने से जग में मिले, वो सच्ची पहचान।।
वो सच्ची पहचान, राछ लोहा बन जाता।
मानव बने महान, निखर के जब गुण आता।।
कहती सुनो सरोज, चमक कर हीरा होना।
छोड़ मूल्य का गर्व, सदा चमको बन सोना।।

80.

गीता

गीता पावन ग्रंथ से, मिले कृष्ण उपदेश।
जीवन में इस बात पर, गर्वित भारत देश।।
गर्वित भारत देश, कला जीने की जानों।
लेकर गीता ज्ञान, सदा इनकी यश मानों।।
कहती सुनो सरोज, ज्ञान बिन जीवन रीता।
सच्चा है ये मीत, हमेशा पढ़ना गीता।।

81.

माना

माना तुमको ही सदा, जीवन का आधार।
रखना सर पर हाथ प्रभु, देना मुझे सँवार।।
देना मुझे सँवार, दया अपनी तुम करना।
पकड़े रखना हाथ, मुझे फिर क्यों है डरना।।
कहती सुनो सरोज, वहाँ सबको है जाना।
इस दुनिया को छोड़, तथ्य ये मैंने माना।।

82.

कहना

कहना तुमसे चाहती, मन की सारी बात।
ओठों पर आते नहीं, मेरे क्यूँ जज्बात।।
मेरे क्यूँ जज्बात, सोच में है मन डूबा।
दुनिया की हालात, देख मेरा दिल ऊबा।।
कहती सुनो सरोज, भाव में क्यूँ है बहना।
चलना सच्ची राह, सार तुमसे ये कहना।।

83.

सहना

सहना अब तुम सीख लो, जीना हो आसान।
धीरज से कटता सदा, संकट सब लो जान।।
संकट सब लो जान, धैर्य जिसमें है रहता।
होता वो बलवान, सदा मीठा ही कहता।।
कहती सुनो सरोज, सहन करके तुम बहना।
करना तुम मत क्रोध, सीख लो सब कुछ सहना।।

84.

वंदन

वंदन जननी का करो, लेलो तुम वरदान।
उनके पग में सिर झुके, मिले सदा सम्मान।।
मिले सदा सम्मान, भ्रमित हो कर मत रहना।
रखो डगर तुम साफ, मुझे तुमसे है कहना।।
कहती सुनो सरोज, बढ़ो आगे तुम नंदन।
रखना माँ की लाज, करो उनका तुम वंदन।।

85.

आसन

आसन प्रतिदिन कीजिये, तनमन रहे निरोग।
काया कंचन सी लगे, करने से नित योग।।
करने से नित योग, दूर आलस हो जाता।
करते जो हर भोर, तेज मुख मण्डल छाता।।
कहती सुनो सरोज, सदा रखना अनुशासन।
होंगे उच्च विचार,करो प्रतिदिन सब आसन।।

86.

आतुर

होता आतुर हिय अगर, दर्शन दे गोपाल।
बंशी धुन सुन भागते, सारे ग्वाले बाल।।
सारे ग्वाले बाल, धेनु तरुवर खुश होते।
गोपी जाती झूम, नयन खुशियों से रोते।।
कहती सुनो सरोज, मगन होकर दिल खोता।
लगे मिलन की आस, तड़प हिय आतुर होता।।

87.

आभा

राधा, आभा देख के, श्याम हुए मदहोश।
बंशी धुन हैं छेड़ते, भरे प्रीत का जोश।।
भरे प्रीत का जोश, तान सुन राधा भागे।
खींचे कान्हा ओर, प्रेम उनके मन जागे।
कहती सुनो सरोज, श्याम बिन जीवन आधा।
सुध-बुध दे सब छोड़, बसी कान्हा मन राधा।।

88.

चितवन

चितवन प्रभु मत फेरना, रखना मेरा ध्यान।
पलकों में रखना सदा, देना मुझको ज्ञान।।
देना मुझको ज्ञान, मुझे विदुषी वर वरना।
जनहित के हों काम, साथ तू फिर क्यूँ डरना।।
कहती सुनो सरोज, शक्ति का बनकर उपवन।
खिलूँ सदा हर ओर, बसो प्रभु मेरे चितवन।।

89.

मोहक

लगता मनमोहक सदा, रखता नई बहार।
देखो आज बसंत फिर, लाया प्रीत फुहार।।
लाया प्रीत फुहार, बाग में तरुवर झूमें।
कोयल गाती गीत, सुमन को भौरें चूमे।।
कहती सुनो सरोज, रात भर चंदा जगता।
चाँदनी छवि निहार, दृश्य मंजुल है लगता।।

90.

शीतल

शीतल छाया दे रही, सदा मात की गोद।
आँचल में बचपन पले, बाल मनाएँ मोद।।
बाल मनाएं मोद, पकड़ कर अँगुली उनकी।
बढ़ते पाँव बढ़ाय, मिले खुशियाँ सब मनकी।।
कहती सुनो सरोज, स्वर्ण सच्चा कब पीतल।
निश्छल उनका स्नेह, प्यार उनका है शीतल।।

91.

हारा

हारा मन से जो हुआ, रहता है गंभीर।
बातें जो भी बोलिये, चुभती जैसे तीर।।
चुभती जैसे तीर, दिखे पूनम भी मावस।
उठती जब-जब पीर, लगे पतझड़ सा पावस।।
कहती सुनो सरोज, करो प्रयास बन धारा।
होना नहीं उदास, धैर्य समक्ष जग हारा।।

92.

जीता

जीता दुनिया में वही, करता है जो प्यार।
सबके मन में वो बसा, रखे मृदुल व्यवहार।।
रखे मृदुल व्यवहार, जीत उसको ही मिलती।
नितजो करे प्रयास, धूप से कलियाँ खिलती।।
कहती सुनो सरोज, रखो मत हिय तुम रीता।
रखो हृदय सदभाव, प्रेम दे सबको जीता।।

93.

नारी

नारी तुम अबला नहीं,तुम्हीं शक्ति की खान।
जीवन में आगे बढ़ो, महिमा अपनी जान।।
महिमा अपनी जान, करो चाहत तुम पूरी।
चलो समय के साथ, दिखा दो बन के सूरी।।
कहती सुनो सरोज, देख ले दुनिया सारी।
हिम्मत मत तू हार, कहे जग सबला नारी।।

94.

साहस

बनता साहस से सदा, बिगड़ा है जो काम।
साहस बिन होता नहीं, ऊँचा जग में नाम।।
ऊँचा जग में नाम, शौर्य की ऊँची गाथा।
भरता सबमें जोश, दिखे जब चौड़ा माथा।।
कहती सुनो सरोज, रहे साहस में जनता।
लो खुद को पहचान, काम साहस से बनता।।

95.

नटखट

नटखट की शैतानियाँ, बढ़ती जाएँ रोज।
कान्हा माखन खा छिपे, माता करती खोज।।
माता करती खोज, लगा मुख माखन उनके।
लगे सलोना रूप, मुकुट सोहे सिर जिनके।।
कहती सुनो सरोज, करें लीला वो झटपट।
मृदुल नंदगोपाल, कहें सब कान्हा नटखट।।

96.

अंकुश

उतना ही अंकुश रखो, जितने से हो काम।
सही किसी की अति नहीं, अति से बिगड़े नाम।।
अति से बिगड़े नाम, देश शासक से चलता।
उत्तम है वो राज, नहीं जनता को छलता।।
कहती सुनो सरोज, नियम में बाँधो इतना।
रहे निग्रह में भीड़, रखो अंकुश बस उतना।।

97.

चंदन

चंदन बन रहना सदा, लिपटे चाहे नाग।
अपना गुण मत छोड़ना, नहीं लगाना दाग।।
नहीं लगाना दाग, पंक में पंकज खिलता।
चढ़ता प्रभु के शीश, मान उसको भी मिलता।।
कहती सुनो सरोज, करो सच का तुम वंदन।
महक सदैव बिखेर, रहो बनके तुम चंदन।।

98.

थोड़ा

थोड़ा भोजन कीजिए, सेहत का रख ध्यान।
जिसने इसे बना लिया, वो ही जन धनवान।।
वो ही जन धनवान, स्वस्थ तन-मन से होता।
होता स्वस्थ विकास, रोग पीड़ित ही रोता।।
कहती सुनो सरोज, ध्यान आसन जो छोड़ा।
वैद्यराज को छोड़, योग नित करना थोड़ा।।

99.

पूरा

करना पूरा तुम सदा, शुरू करो जो काम।
नहीं अधूरा छोड़ना, जो भी हो अंजाम।।
जो भी हो अंजाम, जीत फिर पक्की होती।
पूर्ण बने यूँ काज, फसल पकती जो बोती।।
कहती सुनो सरोज, डगर से है क्यूँ डरना।
मंजिल जब है पास, कार्य पूरा ही करना।।

100.

सपना

सपना था मुझको मिले, शतकवीर सम्मान।
इतने दिन लिखती रही, सदा लगाकर ध्यान।।
सदा लगा कर ध्यान, बीच में साहस टूटा।
मन जब हुआ निराश, लगा अब लिखना छूटा।।
हिय आवाज सरोज, धर्म लेखन ले अपना।
शब्द बढ़े फिर साथ, करो पूरा तुम सपना।।

सरोज दुबे 'विधा'
रायपुर छत्तीसगढ़

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

नाम- **श्रीमती सरोज दुबे 'विधा'**

शिक्षा- एम.ए. इतिहास, एल.एल.बी.

जन्म- २ मई

पति- श्री आशीष दुबे जी

पिता- स्वर्गीय श्री रमेश चंद्र पांडेय

माता- श्रीमती माया पांडेय

रूचि- लेखन, पठन, पाककला, भ्रमण,

विधा- पद्य एवं गद्य, कविता, दोहा, कुंडलियाँ हाइकू, कहानी, निबंध, भजन, लघु कथा,गीत, नवगीत, माहिया, कहमुकरी आदि

प्रकाशन- विभिन्न मंचो में कविता पाठ,पत्र पत्रिकाओं में रचनायें प्रकाशित सनर्मदा के रत्न, उजेश एवं काव्य सृष्टि साझा काव्य संकलन में रचनाएँ प्रकाशित, कुण्डलियाँ साझा संकलन, ये कुण्डलियाँ बोलती हैं में कुण्डलियाँ प्रकाशित, ये दोहे बोलते हैं, दोहा साझा संग्रह, ई पत्रिका कोरोना विशेषांक में रचना प्रकाशित

प्रकाशाधिन- हाइकू साझा संग्रह, गीत गूँजते से गीत साझा संग्रह, नवगीत साझा संग्रह, लघुकथा साझा संग्रह आदि।

सम्मान- नर्मदा के रत्न साहित्य सम्मान, उजेश साहित्य सम्मान, अर्णव कलश एसोसिएशन कलम की सुगंध द्वारा कलम काव्य गौरव सम्मान और अर्णव कलश एसोसिएशन की विश्व साहित्य नारी कोष द्वारा कलम काव्य गौरव सम्मान,विश्व मैत्री मंच के द्वारा सम्मान पत्र और महान कवि सुमित्रानंदन पंत स्मृति सम्मान, कथा शिल्पी सम्मान आदि प्राप्त हुआ।

संपर्क सूत्र- नाम श्रीमती सरोज दुबे 'विधा'

पता- श्री आशीष दुबे, फाफाडीह, रूपरेला मार्ग, रमन मंदिर वार्ड, टांक कालोनी, १७१/दुबे हॉउस, रायपुर छत्तीसगढ़, पिन कोड- ४६२००६

मोबाइल- ६४२४२०३६७१

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-224-1

मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/